जीवन रक्षक बैज

ब्रह्माकुमार संदीप,
बहादुरगढ़

पिछले वर्ष (2013) ब्रह्माकुमारी आश्रम में रक्षाबंधन के पावन पर्व पर परमात्म स्मृति का तिलक लगाकर, दिलखुश मिठाई खिलाकर, रक्षा का सूत्र निमित्त बहन द्वारा बांधा गया। मैंने भगवान से मन ही मन वायदा किया कि मैं ईश्वरीय बैज सदैव लगा कर रखूँगा ताकि मुझे परमात्मा की याद निरंतर बनी रहे। मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा की और भगवान ने भी मेरी रक्षा का वायदा किया।

अचानक घटी दुर्घटना

प्रतिज्ञा करने के बाद साल में 365 दिन बैज लगाया और इस वर्ष (2014) रक्षाबंधन के पावन दिन पुन: रक्षा-सूत्र बंधवाकर सोनीपत सेवास्थान की ओर मोटरसाइकिल से आ रहा था। बीच रास्ते में मेरे सामने एक गाड़ी वाले ने एकदम ब्रेक लगा दिए जिस कारण मैं बुरी तरह से दुर्घटनाग्रस्त हो बीच सड़क पर गिर गया। सिर में चोट लगने के कारण बेहोश हो गया। गाड़ी वाले ने मुझे तुरंत सड़क से उठा कर अपनी गाड़ी में बिठा लिया और उस भीड़ वाली जगह से निकल गया। मेरे प्राण तन से निकलते देख वह घबरा गया और सड़क के किनारे झाड़ियों में सुनसान जगह पर फेंक कर भाग गया।

भगवान ने निभाया अपना वायदा

कुछ देर बाद वहाँ से गुजर रहे दो मोटरसाइकिल सवार भाइयों ने मुझे झाड़ियों में पड़े देख अनुमान लगाया कि कोई शराबी नशे में पड़ा है, फिर वे आगे निकल गए। उनमें से एक भाई की बुद्धि को भगवान ने तुरंत टचिंग दी कि एक बार देख तो लें। उन्होंने मोटरसाइकिल को घुमाया और वापिस मेरे पास आए। मुझे उलट-पलट कर देखा तो उनकी नज़र मेरे ईश्वरीय बैज पर गई। वे आपस में कहने लगे, यह तो कोई ओमशांति का भाई है। उन्होंने तुरंत मोरथल (सोनीपत) ब्रह्माकुमारी आश्रम में फोन कर दिया। एक सेकण्ड की भी देरी किए बिना ब्रह्माकुमार भाइयों ने पहुँच कर मेरा प्राथमिक उपचार किया और हॉस्पिटल में दाखिल करा दिया। इस तरह भगवान ने रक्षा करने का अपना वायदा पूरा किया।

परिवार में रक्षाबंधन के दिन सभी संबंधी आए हुए थे। दुर्घटना की खबर सुनकर सबके होश उड़ गए और सभी हॉस्पिटल पहुँच गए। पर तब तक तो भगवान द्वारा भेजे गए फरिश्तों (ब्रह्माकुमार भाइयों) द्वारा मुझे नए जीवन का गिफ्ट मिल चुका था। सभी परिवार वालों ने मिलकर भगवान का लाख-लाख शुक्रिया किया। मेरे दिल से भी बारंबार मेरे सच्चे रक्षक के लिए शुक्रिया निकलता है जिन्होंने मुझे नया जीवन दिया। मेरा तो मेरे भाई-बहनों से केवल यही कहना है कि जीवन-रक्षक बैज सदा लगाकर रखें। ☺